## For us, August 15 holds a special significance…

by Narendra Modi 14. August 2009 21:12

दोस्तो,

अगस्त महीना यानी कि क्रांति का महीना।
अगस्त महीना यानी त्योहारों, मेलों एवं उत्सवों का महीना,

लेकिन हमारे लिए 15 अगस्त का महत्व तो सबसे ज्यादा है क्योंकि इस दिन सैंकड़ों साल पुरानी गुलामी की जंजीरें तोड़कर अपना देश आजाद हुआ था।
हमें स्वतंत्रता मिली, जिसका आनंद आज हम सब महसूस कर रहे हैं. हम सब उसी मिली आजादी के कारण आज आप अपने अपने विचार एक दूसरे के साथ स्वतंत्र रूप में बाँट रहे हैं। हमारे पास आजादी दिलाने वाले सब बलिदानी सपूतों को नमन करने का यही अवसर है।

दोस्तो, आज मेरे मन को स्पर्श कर गया एक अनुभव, जो मैं आप सबके साथ बाँटना चाहता हूँ।
आजाद हिंदुस्तान के श्रीनगर में आज भी स्वतंत्रता के बाद भारत का तिरंगा फहराना यानी कि अपनी मौत को दावत देना, जैसी स्थिति अपने देश के दुश्मनों ने खड़ी कर रखी थी।
आतंकवादी श्रीनगर के लाल चौंक में अपने तिरंगे की होली जलाते थे. अपने तिरंगे को जूतों के नीचे कुचलते थे, और करोडों देशवासियों की आस्था पर घातक चोट करते थे, लेकिन ऐसे भयानक दिनों 1991-92 के दौरान श्रीनगर के लाल चौंक में तिरंगे झंडे को फहराने का निर्णय हुआ।

26 जनवरी, 1992 के दिन श्रीनगर के लाल चौक में तिरंगा फहराने का निर्णय लिया गया और इसके साथ ही कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक तिरंगे को लेकर एकता यात्रा की शुरूआत हुई। मेरे अच्छे नसीब थे कि भाजपा ने इस कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मुझे सौंपी। इस एकता यात्रा के दौरान एक घटना घटी, जो मेरे मन को छू गई थी।

जब एकता यात्रा का रथ लेकर हम तमिलनाडु में से गुजर रहे थे, तब खेत में काम कर रहा एक गरीब किसान, जिसके शरीर पर सिर्फ एक लुंगी थी, वो रथ को देखकर एकदम दौड़ता हुआ सड़क पर आ गया। और वे हमारे काफिले को रोकने का प्रयास करने लगा एवं उसने सड़क के बीचोबीच खड़े होकर हमारी यात्रा को रुकने के लिए मजबूर कर दिया।

जब रथ अटक गया..
हमारा काफिला भी थम गया…

आंखों में एक अजीब खुमारी के साथ वह किसान हमारे सपीम आया एवं उसने मेरे हाथ में 11 रुपए रख दिए एवं 'रथ' को थोड़ी देर तक ऐसे ताकता रहा, जैसे हमारे प्रयासों को सलाम कर रहा हो, और बाद में उसने अपनी तमिल भाषा में कुछ कहा।वो किसान क्या बोला, वह हमको हमारे साथ चल रहे एक तामिल साथी ने समझाया। राष्ट्रवाद से भरे हुए उसके शब्दों का भावार्थ यह था कि मैं तो श्रीनगर के लाल चौंक तक आपके साथ नहीं आ सकता लेकिन मेरी जगह पर आप एक और तिरंगा श्रीनगर के लाल चौंक में फहरा देना। उस दिन किसान की उस भावना में भारत की आजादी के उज्जवल भविष्य के मुझे दर्शन हुए।

दोस्तो, मुझे जितना संतोष देश के दुश्मन आतंकवादियों के बीच एवं गोलियां की वर्षा में श्रीनगर के लाल चौंक पर गौरव भरा तिरंगा फहराने का हुआ था, उतना ही गर्व उस गरीब किसान की प्रचंड देशभक्ति को देखकर भी हुआ था।

आप सबको आजादी के इस पर्व की ढेरों शुभकामनाएं…

आप सब का,

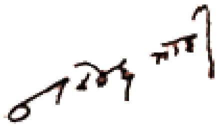

Copyright © 2009 NarendraModi.com